

# भारत भवन वोट नहीं दिला सकता : वाजपेयी

■ रहीम गिर्जा ■

**भोपाल, 21 फरवरी.** पर्याप्त वित्तीय साधन व उस कद के लोग जिनकी आवाज को सुना जाता हो, के अभाव में भारत भवन का कुछ नहीं हो सकता. स्वायत्त को वित्तीय सहायता नहीं देना सरकार की भूल है. उन्होंने कहा कि भारत भवन जरूर वोट दिलाने में असमर्थ है.

यह विचार जाने-माने कवि व आलोचक अशोक वाजपेयी ने 'नवभारत' के साथ एक विशेष चर्चा में व्यक्त किये. श्री वाजपेयी ने कहा कि बिना किसी हस्तक्षेप के काम करने की आजादी मिलनी चाहिये, तभी भारत भवन की उत्कृष्टता वापस आ सकती है.

उन्होंने कहा कि भारत भवन की उत्कृष्टता को बनाये रखने के वर्चस्व, श्रेष्ठता व प्राथमिकता के साथ समझौता नहीं होना चाहिये. नहीं तो भारत भवन के होने के अर्थ बदल जाते. यदि इनमें व्यवस्था की रीच नहीं है तो उसको एक हादसा मानकर छोड़ देना चाहिये.

भारत भवन ने कलाओं का एक बहुत बड़ा रसिक समाज पैदा किया. उसकी भी जिम्मेदारी

बनती है कि वह भी सरकार पर दबाव बनाये व भारत भवन के स्तर को बनाये रखा जाये. श्री वाजपेयी ने कहा कि मैं भारत भवन वापस नहीं आना चाहता हूँ. मुख्यमंत्री ने जितने भी वादे मुझसे किये उनमें से एक को भी पूरा नहीं किया है. मेरे पास ज्यादा जीवन नहीं बचा है, जो बचा



बिना  
हस्तक्षेप के काम  
करने की आजादी  
मिलनी चाहिए तभी  
भारत भवन की  
उत्कृष्टता वापस आ  
सकती है.

हैं मैं उसमें समाज पत्रिका गठित करने के साथ कबीर व गालिल पर किताब लिख रहा हूँ. चित्रकार राजा के आत्म वृत्तों को केंद्र में रखते हुये हिन्दी और अंग्रेजी में पुस्तक लिख रहा हूँ जो शीघ्र ही बाजार में आ जायेगी. साथ ही शास्त्रीय गायक मल्लिका अर्जुन, मंसूर व चित्रकार

जगदीश स्वामीनाथन पर भी किताब लिखने की योजना है.

सुविख्यात लेखिका महाश्वेता देवी की साहित्य अकादमी के अध्यक्ष पद के उम्मीदवार के रूप में हुई हार को उन्होंने प्रजातांत्रिक निर्णय बताते हुये कहा कि यह पारदर्शिता की हार है और वह इस बात का भी प्रमाण कि राष्ट्रीय संस्थाओं में भी उत्कृष्टता के लिये भी जगह नहीं बची है.

हिन्दुत्व एजेंडा पर प्रतिक्रिया देते हुये श्री वाजपेयी ने कहा कि जो इस एजेंडा को चला रहे हैं वह न तो धर्म के सच्चे प्रतिनिधि हैं न ही उन्हें धर्म की समझ है. उन्होंने कहा कि धर्मनिरपेक्षता के नाम पर सारे धर्मों की उपेक्षा की गई है. उस पर पुनर्विचार करने की जरूरत है.

जिस तरह से राजनीति को राजनेताओं पर नहीं छोड़ा जा सकता ठीक उसी तरह धर्म को संतों और मौलवियों के ऊपर नहीं छोड़ा जा सकता है. उनकी अपनी सामाजिक सक्रियता है और यह हमारे जीवन को प्रभावित करती है. अंत में उन्होंने कहा कि समाज के अंतर्गत राष्ट्रीय समस्याओं पर अक्टूबर में राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया जा रहा है.